

सोना वही, रूप नाए

अनेकांत की एक कहानी



ਸੋਨਾ ਵਹੀ, ਰੂਪ ਨਏ

ਪਾਤਰ ਪਰਿਚਯ



ਮੀਰਾ



ਨਮਨ



ਬਾਬਾ

“बाबा, कितना सुंदर
घड़ा है!” मीरा बोली।



नन्ही मीरा अपने बाबा की दुकान पर आई। बाबा
सुनार थे। मेज पर सोने का एक छोटा घड़ा रखा था।

मीरा ने पूछा, “फिर
घड़े का क्या होगा?”

बाबा बोले, “आओ, काम
पूरा होने पर देखना।”



एक दिन घड़े के मालिक आए। “इसी सोने से एक
मुकुट बना दीजिए।”

मीरा बोली, “अरे!
घड़ा तो चला गया!”

उसका भाई नमन
बोला, “लेकिन उसका
सोना तो यहीं है!”



बाबा ने घड़े का सोना पिघलाया। उसी सोने को नया
आकार दिया। कुछ दिनों बाद मुकुट तैयार था।

“बाबा, हममें से कौन
सही है?” मीरा ने पूछा।



बाबा मुस्कुराए। “मीरा घड़े के रूप की बात कर रही
है। वह रूप अब नहीं है। नमन सोने की बात कर
रहा है। सोना अब भी है।”

“तो घड़े का रूप मिटा,
मुकुट का रूप बना
और सोना बना रहा!”

“हाँ,” बाबा बोले।
“क्या बदला और क्या
बना रहा, दोनों देखो।”



मीरा ने मुकुट को देखा।

“अब इसी सोने से
कंगन बनवाना है।”



कुछ समय बाद मालिक फिर आए। बाबा ने मुकुट
के सोने को पिघलाकर कंगन बना दिया। इस बार
मीरा ध्यान से देख रही थी।

“अब मुकुट का रूप
नहीं रहा,” मीरा बोली।

“कंगन का रूप बन
गया!” नमन बोला।



दोनों हँस पड़े। “और सोना अब भी है!”

मीरा ने पूछा, “क्या यह
कंगन अभी घड़ा भी है?”



“नहीं,” बाबा बोले। “अभी इसका रूप कंगन है।
पहले इसी सोने का घड़ा था। पहले और अभी का
अंतर भी याद रखना।”

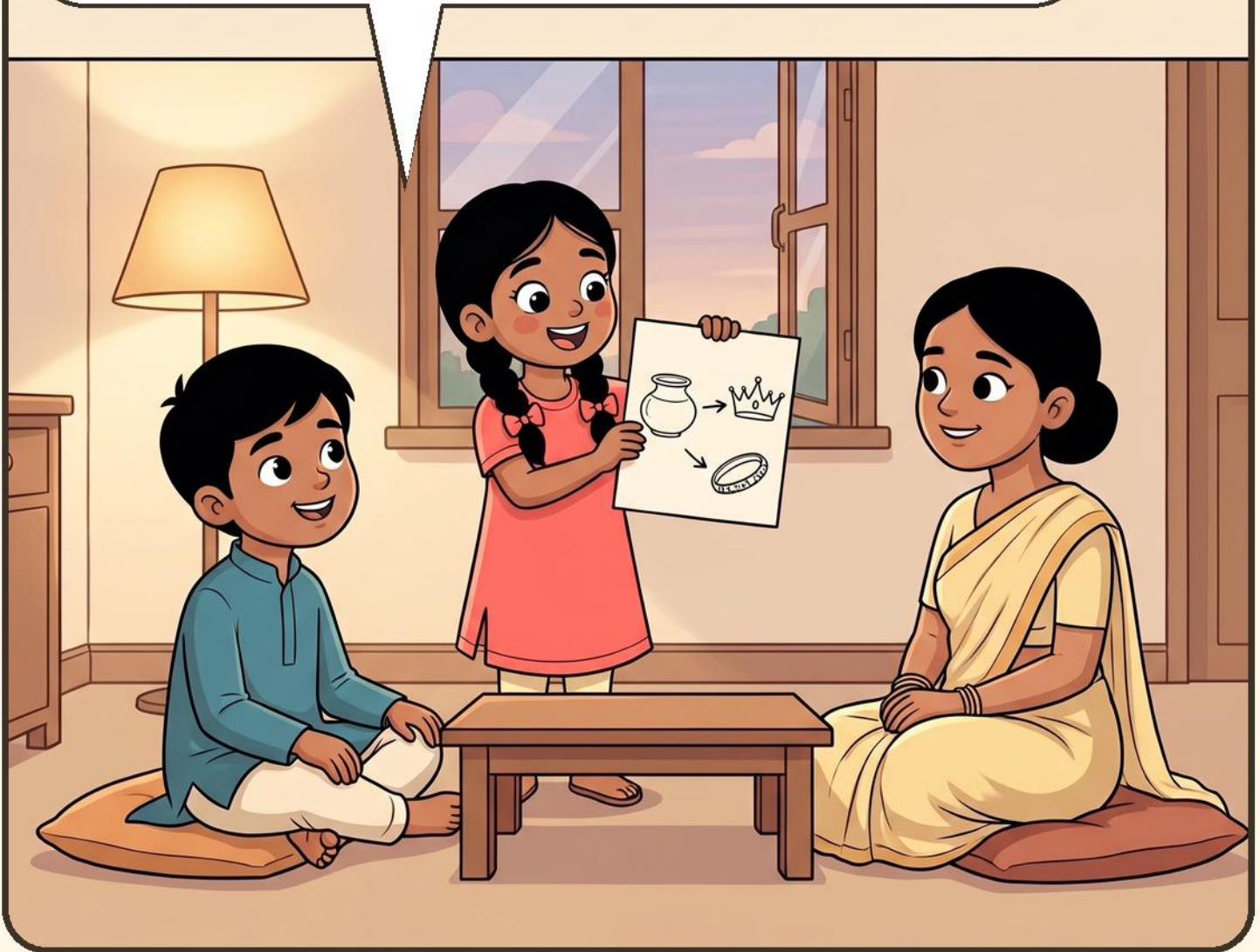
नमन बोला, “तो मैं इसे
सोना कहूँ या कंगन?”

“दोनों कह सकते
हो,” बाबा बोले।



“किससे बना है, यह बताओ तो सोना। अभी
कौन-सा रूप है, यह बताओ तो कंगन।”

“पहले घड़ा, फिर मुकुट, फिर कंगन। रूप
बदलते गए, सोना बना रहा। अब मैं पूछूँगी,
हम किस बात को देखकर बोल रहे हैं?”



घर जाकर मीरा ने कहानी सुनाई।

सीख



किसी वस्तु को समझते समय उसके अलग-अलग पहलुओं को देखना अनेकांत की सीख है। इस कहानी में सोने और उसके रूप, दोनों पर ध्यान दिया।

अपनी बात किस दृष्टि से कह रहे हैं, यह साफ बताना स्याद्वाद की सीख है। जैसे, “सोने की दृष्टि से वही है, रूप की दृष्टि से बदल गया है।” यहाँ “स्यात्” का अर्थ “किसी अपेक्षा से” है, केवल “शायद” नहीं। इसका मतलब हर बात को बिना जाँचे सही मान लेना नहीं है।

बच्चों से पूछें



घड़े से मुकुट बनते समय क्या बदला और क्या बना रहा?

अभी बने कंगन को घड़ा क्यों नहीं कहेंगे?

सोना वही, रूप नए

